1857 के स्वतंत्रता संग्राम में सहारनपुर जनपद की भूमिका

आलोक कुमार*

*असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, गोचर महाविद्यालय, रामपुर मनिहारान, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

Email: aloketah383@gmail.com

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19463595

Received on: 18/01/2026 Accepted on: 06/02/2026 Published on: 08/03/2026

सारांश:

1857 देश को अंग्रेजी शासन से मुक्त कराने का प्रयास किया गया, जिसकी शुरूआत मेरठ छावनी के सैनिकों की बगावत से हुई। भारत की स्वतंत्रता के इस संघर्ष ने अंग्रेजी साम्राज्य को झकझोर कर रख दिया। सहारनपुर के जनपद के वासियों ने भी इसमें बढ-चढ़कर भाग लिया। सहारनपुर में अंग्रेजों के विरूद्ध बगावत सिपाहियों ने नहीं बल्कि जनता ने की। सहारनपुर जिले के गूजरों तथा रांघडों ने फिरंगियों तथा उनके आश्रित जमींदारों, महाजनों पर आक्रमण कर एक ऐसा क्रम प्रारम्भ किया कि सरकारी तंत्र आतंकित हो गया। 1857 के स्वतंत्रता संघर्ष के सहारनपुर जिले में सबसे पहले अंग्रेजों के विरूद्ध हथियार गूजरों ने उठाये। बाबर, शेरशाह के समय से ही गूजरों ने साम्राज्य में अशानित और अराजकता फैलाई थी। गूजरों और रांघडों ने अंग्रेजों के साथ-साथ जमींदारों एवं महाजनों पर भी हमले किए। जमींदार और साहूकार वर्ग अंग्रेजी शासन का सहारा लेकर किसानों का खून चूसता था। सहारनपुर के स्वतंत्रता का यह संघर्ष वास्तव में जनक्रांति थी। गूजरों, रांघडों और बन्जारों ने अंग्रेजी सत्ता को जगह-जगह चुनौती दी और हारकर भी वीरता और देशभक्ति की मिशाल कायम कर गये।

मुख्य शब्द:- *फिरंगी, आतंकित, गूजर, रांघड, सरकारी तंत्र और जनक्रांति।*

फिरंगियों से देश को मुक्त कराने के प्रयास की शुरूआत 10 मई 1857 को मेरठ छावनी के तीसरी कैवेसरी के सैनिकों द्वारा की जाती है।, जिसमें अंग्रेजी साम्राज्य को झकझोर कर रख दिया। देश के अन्य भागों की तरह सहारनपुर जिले के लोगों में भी अंग्रेजों के विरूद्ध नफरत का वातावरण तैयार हो रहा था। मेरठ विद्रोह का समाचार सहारनपुर 12 मई को पहुँचा। इस खबर से अंग्रेज इतने डर गये कि सहारनपुर के मजिस्ट्रेट राबर्ट स्पेनकी ने अंग्रेज स्त्रियों और बच्चों को मसूरी भेजने का निर्देश दे दिया।[1] सहारनपुर जिले में गूजरों, रांघड़ों ने अंग्रेजों, जमींदारों एवं महाजनों पर सिलसिलेवार आक्रमण प्रारम्भ कर दिया। विद्रोह एक के बाद दूसरे गाँव में फैलता चला गया। स्वतंत्रता के इस प्रथम संग्राम में सहारनपुर जिले में सबसे पहले गूजरों ने

हथियार उठाये। सर हेनरी इलियट ने लिखा था कि ‘‘गूजरों ने उत्तर-पश्चिमी भारत के मेरठ डिवीजन में 1857 के विद्रोह में खास उपद्रव किये। देहातों में हमारे खिलाफ सिर्फ गूजर और रांघड ही थे।[2] गूजरों ने गंगा-यमुना दोआब में मुगल शक्ति को क्षीण करके मेरठ, बुलन्दशहर और सहारनपुर में अपनी शक्ति बहुत बढ़ा ली थी।[3]

सर जॉन एडवर्ड वाल्फोट ने लिखा है कि चारों ओर गूजरों के गाँव 50 वर्ष तक बिल्कुल शान्त रहने के बाद एकदम बिगड उठे और मेरठ से गदर शुरू होने के चंद घण्टों के भीतर ही भीतर उन्होंने तमाम जिलों को लूट लिया और खुलेआम बगावत कर दी।[4] उन्होंने मालगुजारी देना बन्द कर दिया सरकारी खजाने को लूटने लगे। वास्तव में गूजर 1857 की क्रांति के अग्रदूत बन गये थे। जनपद के बडे भू-भाग पर कुछ समय के लिए फिरंगियों का अधिकार समाप्त हो गया। अंग्रेजों ने गूजरों के लिए डाकू और लुटेरे शब्द का इस्तेमाल किया है।[5] गूजरों ने अंग्रेज अधिकारियों के साथ, उत्पीडन में अंग्रेजों का साथ देने वाले जमींदारों, महाजनों, व्यापारियों पर भी आक्रमण किए और उन्हें लूटा। गूजरों के साथ रांघडों ने भी लूटमान में बढ-चढ़कर भाग लिया। किसानों ने अंग्रेज सरकार के प्रति नफरत का भाव क्यों था, इसका उत्तर सहारनपुर के तत्कालीन ज्वाइंट मजिस्ट्रेट राबर्टसन ने स्वयं ही दिया है। उन्होंने लिखा है कि ‘‘किसान अंग्रेजों से घृणा इसलिए करते हैं, कि दुनियाँ के सबसे बेईमान साहूकार वर्ग को अंग्रेजी कानून ने मासूम और लापरवाह वर्ग के किसानों का खून चूसने की इजाजत दे दी है। मैंने यह अनुभव किया है कि सबसे अधिक घृणा छोटे-छोटे जमींदार करते थे, जिनकी सम्पत्ति का अपहरण बनियों ने हमारी अदालतों के जरिए दिया था।[6]

राबर्टसन के कथन से स्पष्ट है कि साहूकारों, महाजनों द्वारा आर्थिक शोषण के खिलाफ गूजरों एवं रांघडों ने लूटमार की। साहूकारों एवं महाजनों को अंग्रेजों का भी समर्थन प्राप्त था। यह वास्तव में शोषित और शोषक के बीच का संघर्ष था। सहारनपुर में विद्रोह इतना प्रबल था कि अंग्रेज दहशत में आ गये और तुरंत कोई प्रभावी कदम नहीं उठा सके। सहारनपुर गजेटियर के अनुसार जनपद का अधिकांश भाग स्वामीभक्त था परंतु धीरे-धीरे अशान्ति के लक्षण प्रारम्भ हो गये[7] किन्तु यह कथन स्वीकार्य नहीं है, क्योंकि अंग्रेजी सत्ता ग्रामीण क्षेत्र की अपेक्षा नगरों में दिखाई देती थी। नगरों में भी बहुत कम अंग्रेज रह गये थे। 27 मई को राबर्टसन एवं मेजर विलियम्स के साथ मिलकर गूजरों और रांघडों के गाँवों को सबक सिखाने की योजना बनाई। उन्होंने बाबूपुर, फतेहपुर, साँपला बक्काल गाँव के दमन के लिए सैन्य दस्ते के साथ घेर लिया। ये तीनों वे गाँव थे जहाँ एक रिसालेदार एवं उनके तीस आदियों पर हमला हुआ था। गाँव वालों ने पडोस के गाँवों से सहायत माँगी।

सहायता पहुँचने से पहले ही रॉबर्टसन ने गाँव पर हमला कर तीनों गाँवों को जला दिया। इसमें सात ग्रामीण मारे गये और 15-16 घायल हुए।[8] राबर्टसन अन्य गाँवों के लिए उदाहरण स्थापित करना चाहता था।

नई दिल्ली रिकार्ड के अनुसार गाँव मानकपुर जिला सहारनपुर के उमराव सिंह मुखिया ने अपने को राजा घोषित कर दिया और आस-पास के गाँव पर अपना अधिकार कर लिया। अंग्रेज उमराव सिंह से अत्यधिक आतंकित थे। स्पैनकी ने ट्रैनच प्सीडन, एडवर्डस एवं कैप्टन गार्सटन के साथ मिलकर मानकपुर पर हमले की योजना बनायी। उमराव सिंह सतर्कता के कारण बच निकले इसकी खोज में गाँव में आग लगा दी तथा जो व्यक्ति मिला उसे बन्दी बना लिया।[9] 2 जून 1857 को पाँचवी इन्फैन्ट्री के कैप्टन ग्रासटीन की हत्या का प्रयास किया गया जो कि विफल रहा। सहारनपुर गूजर विद्रोहियों के नियंत्रण में आ गया। किन्तु उपद्रवी कुछ करते इससे पूर्व देहरादून से मेजर बैगॉट गोरखा सैनिकों को लेकर सहारनपुर पहुँच गया। नकुड पर गूजरों ने 20 जून 1857 को आक्रमण कर दिया। नकुड आस-पास के गाँवों की जनता ने अंग्रेजों का खुलकर विरोध किया। राबर्टसन कुछ सैनिकों और अधिकारियों के साथ नकुड पहुँचे। लोगों ने तहसील और थाने में आग लगा दी। अग्रेजों ने गूजरों के गाँव फतेहपुर पर हमला किया और पूरा गाँव जला दिया। कुछ लोगों को गिरफ्तार करके कैम्प लाया गया। 22 जून की प्रातः गूजरों ने अंग्रेजों के कैम्प को घेर लिया, किन्तु आधुनिक हथियारों से लैस सैनिकों का मुकाबला अधिक देर तक नहीं कर सके। 50-60 गूजर शहीद हो गये। बाद में अंग्रेजों ने यहाँ के चार गाँवों में आग लगा दी।[10]

लैफ्टिनेंट बायसरजन ने क्रांतिकारियों को बहुत क्षति पहुंचाई, उसने सढौली गाँव के मुखिया और उसके 20 अनुयायियों को पकड लिया। बायसरजन ने सढौली और रणदेवा को जला डाला। अंग्रेज कुछ अन्य गाँवों पर हमला करना चाहते थे किन्तु खादर में रांघडों के विद्रोह का समाचार मिलने से विचलित हो उठे। राबर्टसन ने लिखा है कि 22 जून 1857 को मैंने लैफ्टीनेंट बायसरजन द्वारा बनाये गये सढौली के जमींदारों में से एक को तहसील के दरवाजे पर लटकाकर फाँसी दे दी।[11]

सहारनपुर के एक अन्य गाँव बुडढाखेडा के फुतन गूजर ने विद्रोह कर दिया और स्वयं को गूजरों का राजा घोषित कर दिया। इस गाँव में मराठों के समय का एक किला था। गूजरों ने किले के ऊपर दो छोटी तोपें लगा दी। 23 जून को वायसरजन सढौली और रणदेवा में शांति स्थापित कर गोरखा सैनिकों के साथ गंगोह की ओर से बुडढाखेडा पर आक्रमण किया। अंग्रेजों की अधिक शक्ति का अनुमान लगाकर फुतन अपने साथियों के साथ वायसरजन को चमका देकर निकल गया। वायसरजन ने किला नष्ट कर दिया और गाँव को जला दिया।[12]

24-25 जून 1857 को रांघडों ने कौंधकलां में वायसरजन, रॉबर्टसन और बिलकॉक्स पर हमले की योजना बनाई। रांघड मानपुर, उमरपुर तथा शाहपुर के जंगलों में छिपकर अंग्रेजो की प्रतीक्षा करने लगे।[13] अंग्रेजों के नजदीक पहुँचने पर राबर्टसन तथा वाससरजन पर अलग-अलग स्वयं से हमला कर दिया। परन्तु आधुनिक शस्त्रों से युक्त अंग्रेजों का सामना करना कठिन था। लगभग 150 रांघडों ने जान गँवायी।[14] रांघडा कौंधकलां की ओर चलेग गये। वायसरजन ने सबक सिखाने के उद्देश्य से सैन्य टुकडी को खुली छूट दे दी। रांघडों ने घरों तथा पेडों पर छिपकर मुकाबला किया, और वीरता से मुकाबला करते हुए शहीद होते रहे। अंग्रेजों ने कौंधकलां को जलाकर राख कर दिया।[15]

गूजरों तथा रांघडों की ही तरह देश के स्वतंत्रता संघर्ष में बन्जारों ने भी अपने प्राणों की आहूति दी। इनके वीरतापूर्ण कार्यों का उल्लेख अंग्रेज अधिकारियों के पत्रों और रिपोर्ट में मिलता है। ये बन्जारें फुटवा गाँव में इकट्ठे होकर अंग्रेजों पर हमले की योजना बनाने लगे। यहाँ इन्होंने अंग्रेज फौजों और आधुनिक हथियारों का मुकाबला करने के लिए रेत और मिट्टी के अवरोध खडे कर दिए। 14 जुलाई को राबर्टसन और कैप्टन मैलगन, बन्जारों का दमन करने के लिए ज्वालापुर पहुँचे।[16] 15 जुलाई को भारी बारिश के कारण बानगंगा पार नहीं कर सके और नदी के किनारे रानी माजरा में डेरा डाल दिया। 17 जुलाई की सुबह ही बन्जारों ने नदी पार कर अंग्रेजों पर हमला कर दिया।[17]

इस झडप में 6 बन्जारे मारे गये तथा 19 घायल हो गये। अंग्रेजों की शक्ति का अनुमान लगाकर बन्जारे फुटवा से अन्य सुरक्षित स्थान पर चले गये। राबर्टसन ने फुटवा तथा अन्य गाँवों को जला डाला।

19 जुलाई को राबर्टसन सैनिकों सहित रूडकी वापस आया और वहाँ से देवबन्द आया। आतंकित करने के लिए उसने रास्ते में पडने वाले गाँवों को जला दिया। देवबन्द के पास बन्हेडा गाँव को इसलिए जला दिया, क्योंकि उसमें गूजर बसते थे।[18] कैप्टन रीड और वायसरजन ने दुरबहेडा और मानकी गाँव में आग लगा दी। स्पैनकी, राबर्टसन, वायसरजन और कैप्टन रीड जनता को आतंकित करने के लिए हर सम्भव अत्याचार कर रहे थे।

अगस्त से दिसम्बर 1857 तक सामान्यतः सहारनपुर जनपद शान्त रहा। अंग्रेजों ने सितम्बर 1857 में दिल्ली पर पुनः अधिकार कर लिया था। सम्भवतः इसका भी प्रभाव रहा होगा।

सहारनपुर जनपद की जनता ने 1857 के स्वतंत्रता संघर्ष में बढ-चढकर भाग लिया। यहाँ विद्रोह सैनिकों द्वारा नहीं बल्कि जनता द्वारा किया गया था। ग्रामीण जनता ने तो कहीं-कहीं अंग्रेज सत्ता को समाप्त कर ही दिया था। सहारनपुर में गूजरों, रांघडों और बन्जारों ने स्वतंत्रता के लिए कुरबानियाँ दी, किन्तु आधुनिक शस्त्रों एवं प्रशिक्षण युक्त अंग्रेजी सेना को सामना करना लगभग नामुमकिन था। जनपद वासियों ने अपने हौसले से इनका मुकाबला किया।

संदर्भ:

- स्पैनकी, आर. 1857), पत्र संख्या 84; 26 सितम्बर 1857, आर. स्पैनकी द्वारा एफ. विलियम्स (कमिश्नर, प्रथम डिवीजन, मेरठ) को लिखा गया पत्र, *सहारनपुर फ्रीडम स्ट्रगल इन यू.पी.*, पृ.94
- शर्मा, कृष्णचन्द्र, *महाराष्ट्र मानस,* पृ. 49
- शर्मा, कृष्णचन्द्र, *महाराष्ट्र मानस*
- शर्मा, कृष्णचन्द्र, *महाराष्ट्र मानस*
- शर्मा, के. के. (1986), *सहारनपुर संदर्भ*, संदर्भ प्रकाशन, सहारनपुर, पृ. 111
- रॉबर्टसन, एच. डी. (1857), *ड्यूटीज़ ड्यूरिंग द रिवोल्ट ऑफ नॉर्थ-वेस्ट प्रोविन्सेज ऑफ इंडिया*, जून 1857, पृ. 135
- *डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, उत्तर प्रदेश* (1921), भाग-2, पृ. 198
- *म्यूटनी नैरेटिव्ज, नॉर्थ-वेस्ट प्रोविन्सेज,* पत्र संख्या 406
- *सहारनपुर डिस्ट्रिक्ट नैरेटिव्ज*, पृ. 3, पैरा 15; पृ. 25, पैरा 5
- *सहारनपुर डिस्ट्रिक्ट नैरेटिव्ज*, पृ. 3, पैरा 15; पृ. 25, पैरा 5
- *सहारनपुर डिस्ट्रिक्ट नैरेटिव्ज,* पृ. 26, पैरा 10
- *सहारनपुर डिस्ट्रिक्ट नैरेटिव्ज,* पृ. 26, पैरा 10
- *सहारनपुर डिस्ट्रिक्ट नैरेटिव्ज,* पृ. 26, पैरा 10
- *सहारनपुर डिस्ट्रिक्ट नैरेटिव्ज,* पृ. 26, पैरा 10
- *सहारनपुर डिस्ट्रिक्ट नैरेटिव्ज,* (वायसनजन के अनुसार उद्धरण: "हमारे आदमियों ने किसी को भी नहीं छोड़ा।")
- *म्यूटनी नैरेटिव्ज*, नॉर्थ-वेस्ट प्रोविन्सेज।
- *सहारनपुर डिस्ट्रिक्ट नैरेटिव्ज,* पृ. 22, पैरा 1; परिशिष्ट, पृ. 9
- *सहारनपुर डिस्ट्रिक्ट नैरेटिव्ज,* पृ. 22, पैरा 1; परिशिष्ट, पृ. 9